मिर्च की खेती

- मिर्च मे चरपरापन कैपसीसिन के कारण होता है
- गर्म एवं आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है
- उत्पादन हेतु उचित तापमान 15-35 डिग्री सेल्सियस माना जाता है

- 75-125 सेंटीमीटर में मध्य वर्षा पर इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है
- मिर्च की फसल पाला नहीं सह पाती
- कम आर्द्रता एवं अधिक तापमान होने पर फूल झड़ने लगते है
- सूखी लाल मिर्च हेतु खरीफ की फसल उपयुक्त होती है

प्रजातियाँ

मसाले वाली किस्मे

❖ पूसा ज्वाला	❖ काशी अनमोल
❖ पूसा शेफाली	❖ पंत सी-1
❖ पंत सी-2	❖ कल्यानपुर सुर्ख
❖ कल्यानपुर चंचल	❖ कल्यानपुर चमत्कार
❖ कल्यानपुर चमन	❖ पूसा सदाबहार
❖ काशी विश्वनाथ	❖ पंजाब लाल
❖ हिसार शक्ति	❖ अर्का गौरव
❖ अर्का बसंत	

अचार वाली किस्मे

❖ पूसा ज्वाला	❖ काशी अनमोल
❖ पूसा शेफाली	❖ पंत सी-1
❖ पंत सी-2	❖ कल्यानपुर सुर्ख
❖ कल्यानपुर चंचल	❖ कल्यानपुर चमत्कार
❖ कल्यानपुर चमन	❖ पूसा सदाबहार
❖ काशी विश्वनाथ	❖ पंजाब लाल
❖ हिसार शक्ति	❖ अर्का गौरव
❖ अर्का बसंत	

सब्जी किस्मे

❖ कैलिफोर्निया वण्डर	❖ यलो वण्डर
❖ बुलनोज	❖ चाइनीज जाइंट
❖ वल्डबीटर	

खेत की तैयारी

- दोमट, चिकनी दोमट भूमि सर्वोत्तम
- कार्बनिक पदार्थ पर्याप्त मात्रा में हों
- भूमि का जल-निकास अच्छा होना चाहिए
- मृदा का पी-एच. मान 5.8 से 6.5 के बीच
- पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से, बाद में दो-तीन जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से

बीज की मात्रा एवं रोपाई

- पौध रोपण द्वारा उगाया जाता है
- पौध के लिए मई-जुलाई तथा फ़रवरी-मार्च में बुवाई की जाती है
- 1 हेक्टेयर में पौध लगाने के लिए 1 किलो तथा संकर प्रजातियों के लिए 300 ग्राम बीज की आवश्यकता

- पौध तैयार करने के लिए लगभग 200 वर्गमीटर क्षेत्र में बीज बोना चाहिए
- 3 मीटर लंबे एवं 1.2 मीटर चौड़े आकार के 10-12 बीज शैय्याओं की आवश्यकता होती है
- बीज शैय्या भूमि से 10-15 सेंटीमीटर ऊंचा बनाना चाहिए

- क्यारी में 20 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद, 100 ग्राम सुपर फास्फेट एवं 50 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश मिलाना चाहिए
- बीज की बुवाई लाइनो में करनी चाहिए
- लाइन से लाइन की दूरी 10-12 सेंटीमीटर, पौध से पौध की दूरी 5 सेंटीमीटर तथा बीज को 1-1.5 सेंटीमीटर गहराई में बुवाई करनी चाहिए

- गोबर की खाद व मिट्टी के मिश्रण की एक सेंटीमीटर मोटी तह से बीज को ढक देते है
- बीज जमने से पूर्व हजारे से सिचाई करनी चाहिए
- बरसात के दिनों में पौधे 4-6 सप्ताह में तथा जाड़े में लगभग 8-10 सप्ताह में रोपने योग्य हो जाते है

- पौध को नर्सरी से उखाड़ने के पूर्व हल्की सिचाई करनी चाहिए
- पौध की रोपाई तैयार खेत में लाइनो में करनी चाहिए।
- जुलाई-सितम्बर में रोपाई करने पर लाइन से लाइन की दूरी 60 सेंटीमीटर तथा पौध से पौध की दूरी 40 सेंटीमीटर

- मार्च-अप्रैल में लाइन से लाइन की दूरी 45 सेंटीमीटर तथा पौध से पौध की दूरी 30 सेंटीमीटर
- रोपाई का कार्य शाम के समय करना चाहिए
- रोपाई के बाद खेत में सिचाई कर देनी चाहिए
- रोपाई के 4-5 दिन बाद मरे हुए पौधों के स्थान पर नये पौधे लगा देना चाहिए

खाद एवं उर्वरक

- खाद तथा उर्वरक दोनों का प्रयोग करना आवश्यक
- 200-250 कुंतल प्रति हेक्टर सड़ी गोबर की खाद देना चाहिए
- उर्वरको का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना लाभदायक रहता है

- 60-80 किलोग्राम नत्रजन प्रति हेक्टर
- 40-50 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हेक्टर
- 40 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टर
- नत्रजन की आधी मात्रा, फास्फोरस और पोटास की पूरी मात्रा को रोपाई से पहले
- नत्रजन की शेष मात्रा दो भागो में बांटकर रोपाई के 20 तथा 40 दिन बाद टॉपड्रेसिंग के रूप में

सिचाई

- खेत में नमी की कमी या खेत सूखा है तो इस स्थिति में फूल एवं फल गिरने लगते है, साथ ही फलियां ठीक से भर नहीं पाती और उनके आगे के सिरे सिकुड़ जाते है
- गर्मियों में 6-8 दिन के अंतर पर तथा जाड़ो में 10-15 दिन के अंतर से सिचाई
- खेत से जलनिकास का उचित प्रबंध

खरपतवार नियंत्रण

- खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई-गुड़ाई करना आवश्यक है
- पहली निराई-गुड़ाई रोपाई के 20-25 दिन बाद एवं दूसरी 40-45 दिन बाद
- पौधों की जाड़े कम गहरी होती है इसलिए गुड़ाई हल्की करनी चाहिए

- गुड़ाई करते समय पौधों पर मिट्टी चढ़ा देना चाहिए
- पुष्पावस्था में निराई गुड़ाई नहीं करनी चाहिए

रोग नियंत्रण

- आर्द्र गलन
- जीवाणु उकठा
- मूल-ग्रंथि
- पर्ण कुंचन
- फल सड़न

आर्द्र गलन

- नर्सरी में लगने वाली प्रमुख बीमारी है
- इस रोग में पौधे भूमि की सतह के पास से गलने लगते है
- नर्सरी में पौधों का मुरझाना और सुखाना इस बीमारी का प्रमुख लक्षण है

नियंत्रण

- बीज को 2 ग्राम कैप्टान या थीरम से प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित कर के बुवाई करनी चाहिए
- बीज बोन के 10-15 दिन बाद नर्सरी में कैप्टान 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए

जीवाणु उकठा

- जीवाणु जनित बीमारी
- रोग का प्रभाव पहले निचली पत्तियों से आरम्भ होता
- तने को काटने पर उसमे भूरा जमा हुआ पदार्थ दिखाई देता है
- रोगग्रस्त पौधे सूख जाते है

नियंत्रण

- रोग अवरोधी या सहनशील प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए
- स्ट्रेप्टोसाईक्लीन 100 मिलीग्राम को प्रति लीटर पानी में घोलकर पौधों को आधा मिनट तक डुबोकर रोपाई करनी चाहिए

मूल-ग्रंथि

- पौधों की वृद्धि कम हो जाती है, तथा जड़ो में गाठें पड जाती है

नियंत्रण

- खेत में नीम की खली 25 कुंतल प्रति हैक्टर की दर से मिलाना लाभप्रद

पर्ण कुंचन

- यह रोग वायरस के द्वारा होता है
- रोग में पत्तियों का मुड़ना, पीला पड़ना, पत्तियों का छोटा रह जाना, पौधे का बौना रह जाना, आदि प्रमुख लक्षण है
- रोग ग्रसित पौधों में फलियां नहीं बनती और यदि बनती भी है तो बहुत छोटी रह जाती है

नियंत्रण

- यह वायरस सफ़ेद मक्खी द्वारा फैलता है
- साइपरमेथ्रिन दवा के 0.15% घोल का छिड़काव 10 दिन के अंतराल पर करना चाहिए
- रोगरोधी किस्मो की बुवाई करनी चाहिए

फल सड़न रोग

- रोग के लक्षण प्रायः पके हुए फलो पर दिखाई देता है
- फलो पर गोल धब्बे बन जाते है तथा फल सड़ने लगते है

नियंत्रण

- स्वस्थ तथा प्रमाणित बीज की बुवाई करनी चाहिए
- खड़ी फसल में ब्लाइटाक्स-50 या इंडोफिल एम-45 0.25% का घोल बनाकर 15-25 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए

कीट नियंत्रण

- थ्रिप्स
- कटुवा कीट
- फलीछेदक
- माहू

थ्रिप्स

- पौधों के विभिन्न भागो से रस चूसते है जिससे पत्तियों पर सफ़ेद धारियां पड़ जाती है
- पत्तियां मुड़ जाती है तथा फूल लगना बंद हो जाता है
- फसल की बढ़वार रुक जाती है

नियंत्रण

- साइपरमेथ्रिन दवा के 0.15% घोल का छिड़काव 10 दिन के अंतराल पर करना चाहिए

कटुवा कीट

- कीट का प्रभाव पौधे की छोटी अवस्था में अधिक होता है
- कीट मिर्च के पौधों को जमीन की सतह से काट देता है

नियंत्रण

- 20-25 किलोग्राम एल्डेक्स 5% धूल जमीन में रोपाई के पूर्व मिला देना चाहिए है

फलीछेदक

- सुंडियां फलियों में छेद करके उनके अंदर घुस जाती है तथा फलियों को अंदर से खाती है

नियंत्रण

- नीम की गिरी 40 ग्राम को पीसकर प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए
- डेसिस 28 ई.सी. 1 मिलीलीटर को 2 लीटर पानी या कार्बोसल्फान 25 ई.सी. 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए

माहू कीट

- शिशु एवं प्रौढ़ दोनों पत्तियों से रस चूसते हैं

रोकथाम

- फसल की शुरू की अवस्था में मेटासिस्टाक्स 25 ई.सी. या साइपरमेथ्रिन 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव

तुडाई एवं उपज

- हरी मिर्च या शिमला मिर्च की तुड़ाई मिर्च के पूर्ण आकर होने पर करते है
- आचार वाली मिर्च की तुड़ाई फल के पूरी तरह से लाल होने पर करते है
- मसाले के लिए तुड़ाई मिर्च के पूरी तरह पकने के बाद जब सूखने के लक्षण दिखाई दे तब करनी चाहिए

- उपज किस्म, भूमि, जलवायु और फसल प्रबंध पर निर्भर करती है
- मिर्च की 75-100 कुंतल और सूखी मिर्च की 10-12 कुंतल प्रति हैक्टर तक उपज